माया गुन सब करो हाथ, पेहेचानो प्राण को नाथ।
अब एता आतमसों करो विचार, कौन वचन कहे आधार।। ६८ ।।

माया के गुण, अंग, इन्द्रियों को वश में करके अपने प्राणनाथ को पहचानो। अब इतना आत्मा से विचार करो कि अपने प्रीतम ने यह कौन से वचन कहे हैं?

जोलों जीव विचार विकार न काटे, ज्यों छींट ना लगे घड़े चिकटे।
इंद्रावती कहे सुनो साथ, जिन छोड़ो अपनो प्राणनाथ।। ६९ ।।

जब तक जीव विचार कर संशय (विकार) नहीं मिटाता, तब तक यह वाणी चिकने घड़े की तरह उस पर टिकेगी नहीं। इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे साथजी ! सुनो और अपने प्राणनाथ (धनी) को मत छोड़ो।

फेर फेर ना आवे ए अवसर, जिन हाम ले जागो घर।
थोड़े में कह्या अति घना, जान्या धन क्यों खोइए अपना।। ७० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि ऐसा समय फिर नहीं मिलेगा। बिना चाहना पूरी किए घर में जागना ठीक नहीं है। मैंने तुमको यह थोड़े में बहुत कुछ कहा है। जानकर भी अपने धन (प्राणनाथ) को क्यों गंवाएं?

हम आगे ना समझे भए ढीठ, तो दई श्री देवचंदजीऐं पीठ।
ना तो क्यों छोड़े साथ को एह, जो कछू किया होए सनेह।। ७१ ।।

हम पहले ढीठ हो गए। जब श्री देवचन्द्रजी गए तब हम समझ नहीं पाए। अगर हमने उनसे प्रेम किया होता, वह अपना साथ छोड़कर न जाते।

अब फेर आए दूजा देह धर, दया आपन ऊपर अति कर।
अब ए चेतन कर दिया अवसर, ज्यों हंसते बैठे जागिए घर।। ७२ ।।

अब वही (धाम-धनी) दूसरा तन धारण करके मेरे अन्दर आए हैं। बड़ी कृपा से हमें जागृत करके धनी की पहचान करने का समय दिया है, जिससे हम हंसते-हंसते घर में जागें।

सब मनोरथ हुए पूरन, जो ए बानी विचारो अंतस्करन।
ए तो इंद्रावती कहे फेर फेर, जो धाम धनी कृपा करी तुम पर।। ७३ ।।

मन के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाएंगे, यदि इस वाणी को चित्त में विचार कर देखोगे। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह तुम्हारे ऊपर धाम धनी ने कृपा की है जो दुबारा तन धारण करके आए हैं।

॥ प्रकरण ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ ७३५ ॥

प्रगट बानी प्रकास की

सोई ने सोई सूते क्या करो जी, या अगिन जेहेर जिमी मांहीं जी।
जाग देखो आप याद करो, ए नींद निगल गई जीव के तांई जी।। १ ।।

सुन्दरसाथजी ! इस अग्नि के समान जलाने वाली जहरीली जमीन में सोकर क्या करोगे? सावचेत (सावधान) होकर याद करो और देखो यह माया जीव को निगले बैठी है।

ए नींद तिनको ले गई रे, जो नाहीं साथी आपन जी।
इन ठगनी जिमिऐं बोहोतक ठगे रे, तुम जिन सोओ इत खिन जी।। २ ।।

यह माया उनको निगल गई है जो अपने परमधाम के साथी नहीं हैं। इस ठगनी माया ने बहुतों को ठगा है। तुम यहां पर एक पल के लिए भी मत सोना।

Nijanand App

नाहीं रे नींद कोई घेन घारन, नींद होए तो लीजे उठाए जी।
उठाए जीव को खड़ा कीजे, फेर पड़े सोई उलटाए जी।। ३ ।।

यह कोई साधारण नींद नहीं है। यह कोई बेहोशी का नशा है। नींद होती तो जगा लेते। यदि जीव को उठाकर खड़ा करते हैं तो वह फिर से उलटकर गिर जाता है।

सोई घेनने सोई घारन रे, सोई घूटन अधकी आवे जी।
याही जिमी और याही नींद से, धनी बिना कौन जगावे जी।। ४ ।।

यह वही नींद है, वही बेहोशी का नशा है जिसमें अधिक घुटन हो रही है। ऐसी जमीन से और ऐसी नींद से, धनी बिना कौन जगाएगा?

इन जेहेर जिमी से कोई न उबरया, तुम सूते तिन ठाम जी।
ए जेहेर जिमी अगिन उजाड़ रे, नहीं वसती इन गाम जी।। ५ ।।

इस जहरीली जमीन से कोई निकलकर नहीं जा सका। जहां तुम सोए पड़े हो, यह अग्नि के समान है। उजाड़, वीरान है। जहां न कोई बस्ती है, न गांव है (ठिकाना है)।

ए विख की जिमी और विख के बिछौने, विखै की आकार जी।
अष्ट धात मिने सब विख के, विखै का विस्तार जी।। ६ ।।

यहां जमीन विष की है और बिस्तर जहर का है। विष भरा ही यह तन है और तन के अन्दर आठों धातु (खून, रस, मांस, मज्जा, चर्बी, हड्डी, वीर्य, ओज) भी विष के हैं। सब विष का ही विस्तार है।

गुण पख इंद्री सब विख के, विखै को सब आहार जी।
आतम निरमल एक वतन की, सो तो कही निराकार जी।। ७ ।।

गुण, पख (अंतःकरण), इन्द्रियां—सब विष के हैं (तीन गुण—रजो गुण, तमो गुण, सतो गुण, पख—मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार और दस इंद्रियां-पांच कर्मेन्द्रियां, पांच ज्ञानेन्द्रियां) खान-पान सब विष का है। इस शरीर के अन्दर केवल एक आत्मा है जो विष से रहित है और निराकार है।

विख की तलाई ने विख के ओढ़ना, विख पलंग दिया बिछाए जी।
विख का सिराने विख का ओछाड़, विख पंखा विख वाए जी।। ८ ।।

विष का गद्दा है और विष की रजाई है। विष का पलंग है, विष का तकिया है। विष की पिछौरी है और विष का पंखा विष की हवा दे रहा है।

जागते विख और सुपने विख रे, नींद में विख निदान जी।
बाहेर का विख क्यों कर कहूं रे, वहे आंधी वाए अग्यान जी।। ९ ।।

जागते विष है और स्वप्न भी विष का है। नींद भी विष की है। बाहर के विष का कहां तक वर्णन करें? यहां तो अज्ञान की आंधी चल रही है।

वस्तर विख के भूखन विख के, सकल अंग विख साज जी।
ए विख नख सिख जीव को भेद्यो, सो क्यों छूटे बिना श्री राजजी।। १० ।।

वस्त्र विष के हैं, आभूषण विष के हैं तथा तन का सब सामान विष का ही है। नख से शिख तक विष ही विष है। यह धाम धनी की कृपा के बिना छूट नहीं सकता।

Nijanand App

जोर कर तुम जागो जीव जी, नहीं सूते की एह जिमी जी।
ज्यों ज्यों सोइए त्यों त्यों बाढ़े विख विस्तार, पीछे दुख पावे जीव आदमी जी।। ११ ।।

हे जीव जी ! जोर लगाकर जागो। यह सोने का ठिकाना नहीं है। यहां जैसे-जैसे सोवोगे वैसे-वैसे ही विष बढ़ेगा। बाद में आदमी का जीव दुःखी होगा।

ए जिमी तुम क्यों न छोड़ो, अजूं नाहीं नींद बाढ़ी जी।
इन जिमी नींद दुखड़े घनें रे, पीछे क्योंए न जाए काढ़ी जी।। १२ ।।

इस विष की जमीन को तुम क्यों नहीं छोड़ते? क्या अभी तुम्हारी चाहना पूरी नहीं हुई? इस जमीन में बहुत ज्यादा दुःख है। पीछे किसी तरह से भी नहीं निकला जा सकेगा।

बोहोत देखे दुख अनेक होएसी, ताथें उठो तत्काल जी।
जल के जीव को घर जल में, ज्यों रहे मकड़ी मांहें जाल जी।। १३ ।।

ज्यादा दुःख देखने से और दुःख होगा, इसलिए तुरन्त उठो। संसार के जीवों का घर तो संसार ही है। जिस तरह से जल का जीव जल में, मकड़ी जाल में रहती है, उसी तरह संसार के जीव संसार में रहते हैं।

सब कोई जाली गूंथे अपनी, फेर अपनी गूंथी में उरझाए जी।
उरझे पीछे कई दुख देखे, दुखै में जीव जाए जी।। १४ ।।

यहां सब कोई अपना जाल गूंथते हैं और फिर उसी में ही फंस जाते हैं। फंसने के बाद बहुत दुःखी होते हैं! फिर दुःख में ही प्राण निकलते हैं।

बोहोत दुख देखे जीव जाते, तो भी गूंथे जाली फेर फेर जी।
दोष नहीं इन मकड़ी का रे, इनका घर हुआ जाली अंधेर जी।। १५ ।।

दुःख में पड़कर मरते हुए अनेक जीवों को देखकर भी लोग अपने दुःख का जाल गूंथते हैं। इस संसार में मकड़ी का दोष नहीं है, उसका तो घर ही जाल है।

अपने घर इत नाहीं साथजी, चौदे भवन में कित जी।
ता कारन पिउजी करें रे पुकार, तुम क्यों सूते इत जी।। १६ ।।

हे साथजी ! अपना घर चौदह लोकों में कहीं भी नहीं है। इस वास्ते धनी पुकार करते हैं कि तुम क्यों यहां सोए पड़े हो?

ओ दुख के घर सो भी ना छोड़े, तुम याद ना करो सुख के घर जी।
सास्त्र सबों पे साख देवाई, तुम अजहूं ना देखो चित धर जी।। १७ ।।

संसार के जीव जब अपने दुःख के घर को नहीं छोड़ते, तो तुम अपने सुख के घर को क्यों नहीं याद करते? तुमको सब शास्त्रों से भी गवाही दिलवाई, फिर भी तुम ध्यान से नहीं देखते हो।

बेहद सुख पार बेहद घर, बेहद पार श्री राज जी।
अछरातीत सुख अखंड देवे को, मैं जगाऊं तुमारे काज जी।। १८ ।।

तुम्हारा घर बेहद के पार है जहां पर बेहद सुख हैं। तुम्हारे धनी भी बेहद के पार हैं। इसलिए, हे साथजी ! अक्षरातीत के अखण्ड सुख देने के लिए मैं तुम्हें जगा रही हूं।

Nijanand App

पिउ पुकार पुकार थके, तुम अजहुं जल बिन गोते खात जी।
दिन उगते संझा होत है, पीछे आड़ी पड़ेगी रात जी।। १९ ।।

पिया पुकार-पुकार करके थक गए। तुम अभी बिना जल के डुबकियां लगा रहे हो। दिन उगने के बाद सन्ध्या होती है, फिर पीछे रात आ जाएगी।

रात पड़ी तब कोई न जागे, पीछे कोई ना करे पुकार जी।
निसाएं नींद जोर बाढ़ेगी, पीछे बढ़ेगा विख विस्तार जी।। २० ।।

धनी के जाने पर रात हो जाएगी। तब कोई तुम्हें आवाज देकर नहीं जगाएगा। रात को नींद का जोर बढ़ेगा और फिर माया का विस्तार बढ़ जाएगा।

संझा लगे धनी रेहेसी साथ कारन, तुम अजहूं ना नींद निवारो जी।
पेहेचान पिउ सुख लीजिए, तुम अपना आप वार डारो जी।। २१ ।।

अपने धनी सन्ध्या (कयामत) तक सुन्दरसाथ के वास्ते रहेंगे। तुम अभी भी नींद नहीं छोड़ते हो। धनी को पहचानकर घर के सुख लो। तन, मन और धन उन पर कुर्बान कर दो।

पुकार करते रात पड़ी, पिउ रात ना रेहेसी निरधार जी।
जो दुस्मन तुमको भुलावत हैं, सो तुम क्यों न करत विचार जी।। २२ ।।

धाम धनी के पुकारते-पुकारते रात्रि (महाप्रलय) आ जाएगी और धनी पहले ही चले जाएंगे। तुमको तुम्हारे दुश्मन (रिश्तेदार-बिरादरी वाले) भुला रहे हैं। उनका तुम साथ क्यों नहीं छोड़ते हो?

ए विखम भोम छोड़ते जो आड़ी करे, सो जानियो तेहेकीक दुस्मन जी।
जो लेने न देवे सुख अखंड, सो क्यों न देखो सुन वचन जी।। २३ ।।

इस माया की (विष की) भूमि छोड़ने में जो रुकावट डाले उसे निश्चित ही दुश्मन समझना, क्योंकि वह अखण्ड सुख नहीं लेने देते। हे साथजी ! तुम इन वचनों को विचार कर क्यों नहीं देखते।

ए दुस्मन तेरे विख भरे, जिन लियो संसार घेर जी।
ओ भुलावत तुमको जुदी भांतें, तुम जिन भूलो इन बेर जी।। २४ ।।

यह तेरे दुश्मन जहर भरे हैं और इन्होंने ही सारे संसार को घेर रखा है। तरह-तरह के तरीकों से तुम्हें भुलाते हैं। पर तुम इस बार मत भूलना।

भी तुमको दिखाऊं दुस्मन, जिनहूं न छोड़्या कोए जी।
सो तुमको दिखाऊं जाहेर, तुमको अंदर झूठ लगावे सोए जी।। २५ ।।

मैं तुमको और दुश्मनों की पहचान कराती हूं, जिन्होंने किसी को नहीं छोड़ा। वह तुमको मैं जाहिर करके दिखाती हूं। वह तुमको झूठ की तरफ घसीट रहे हैं।

गुन अंग इंद्री देखो रे चलते, जो उलटे लगे संसार जी।
एही दुस्मन विसेखे अपने, सो करत हैं सिर पर मार जी।। २६ ।।

यह जो तेरे गुण, अंग, इन्द्रियां हैं, वह सब तुम्हें संसार की तरफ खींचने में लगे हैं। यही अपने खास दुश्मन हैं जो सिर पर चोट मार रहे हैं।

तुम करो लड़ाई इनसों, मार टूक करो दुस्मन जी।
फेर वाको उलटाए चेतन करो, ज्यों होवें तुमारे सजन जी।। २७ ।।

तुम उनसे लड़ाई करो और उनको मारकर टुकड़े-टुकड़े कर दो। फिर उन्हें उलटा करके सावचेत करो। तब वह तुम्हारे हितकारी बनेंगे।

Nijanand App

सनमंधी साथ को कहे वचन, जीव को एता कौन कहे जी।
ए वानी सुन ढील करे क्यों वासना, सो ए विखम भोम क्यों रहे जी।। २८ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! तुम मेरे धाम के साथी हो इसलिए तुमको यह वचन कहे हैं। वरन् जीव को इतना कौन कहता? ऐसे वचनों को सुनकर आत्माएं क्यों ढील करेंगी? इस विष की भूमि में क्यों रहेंगी?

छल की भोम को तुम समझत नाहीं, ना सुनत मेरी बात जी।
जानत हो दिन दो पोहोर रेहेसी, पाओ पल में हो जासी रात जी।। २९ ।।

तुम जानते हो कि यह छल की भूमि है, तो सावचेत होकर मेरी बात क्यों नहीं सुनते? जानते हो कि दिन दो प्रहर रहेगा और उसके बाद एक पल में रात हो जाएगी।

अबही रात आई देखोगे, उठसी अनेक अंधेर जी।
जीव अंधेर जब देख उरझसी, तब आवसी विख के फेर जी।। ३० ।।

अभी रात आ गई, ऐसा अनुभव करोगे। उस रात्रि में अनेक तरह के तूफान आएंगे जिसमें जीव अंधेरे में उलझ जाएगा। तब फिर विष ही विष हो जाएगा (जन्म-मरण का चक्कर चालू हो जाएगा)।

विख के फेर अनेक उपजसी, करम केरा जे दुख जी।
भी फिरसी फेर अनेक विध के, काहूं जीव को न होवे सुख जी।। ३१ ।।

किए हुए कर्मों के फल से आवागमन के चक्कर में आना पड़ेगा। अनेक योनियों में घूमने से जीव को सुख नहीं मिलेगा।

सुनियो जो तुम हो ब्रह्मसृष्ट के, जिन आओ मांहें रात जी।
इन रात के दुख घने दोहेले, पीछे उड़सी अंधेर प्रभात जी।। ३२ ।।

सुन्दरसाथजी ! तुम परमधाम की ब्रह्मसृष्टि हो, इसलिए रात्रि आने से पहले जाग जाओ। उस रात के दुःख बहुत कठिन हैं। रात आ जाने पर दुःख प्रातः तक हटाने पर भी नहीं हटेंगे।

दूर होसी इन रात के प्रभात, रात छेह क्योंए न आवे जी।
दुख की रात घनूं लागसी दोहेली, पीछे फजर मुख न देखावे जी।। ३३ ।।

इस रात के बाद सवेरा बहुत दूर होगा। रात्रि का तो अन्त ही नहीं आएगा। दुःख की रात बड़ी कष्ट दायक होगी। प्रातःकाल कहीं दिखाई नहीं देगा।

महाप्रले होसी जब लग, तबलों रेहेसी अंधेर जी।
ता कारन पिउजी करे रे पुकार, जिन भूलो इन बेर जी।। ३४ ।।

जब तक महाप्रलय होगा तब तक अंधेरा रहेगा, इसलिए धनी पुकार रहे हैं कि इस बार मत भूलो।

तारतम के उजाले कर, रोसन कियो इन सूल जी।
कई कोट ब्रह्मांड देखाई माया, पाया अंकूर पेड़ मूल जी।। ३५ ।।

तारतम का उजाला कर धनी ने इस हकीकत की पहचान कराई और कई करोड़ ब्रह्माण्डों में माया का विस्तार दिखाया। अब तारतम ज्ञान से इस माया रूपी पेड़ की जड़ को पहचान लो।

पिउ पधारे बुलावन तुमको, तो होत है एती पुकार जी।
यों करते जो नहीं मानो, तो दुख पाए चलसी निरधार जी।। ३६ ।।

धनी तुमको बुलाने के लिए आए हैं, इसलिए तुमको इतना बुलाया जा रहा है। इतना बुलाने पर भी अगर नहीं मानोगे तो कठिन दुःख भोगकर चलना होगा।

Nijanand App

विखम बड़ा जल मांहें अंधेर, कई लगसी लेहेरें निघात जी।
विसेखें जीव बेसुध होसी, नहीं सुनोगे निध साख्यात जी।। ३७ ।।

इस संसार में मोह सागर दुःखों से भरा हुआ है और इसमें दुःख की लहरों के घाव लगेंगे। उससे हैरान होकर जीव बेहोश हो जाएगा और अपने साक्षात् धनी की वाणी को नहीं सुनेगा।

मांहें मछ गलागल, लेहेरें आड़े टेढ़े बेहेवट जी।
दसो दिसा कोई ना सूझे, फिरवलसी अंधकार पट जी।। ३८ ।।

इस मोह के सागर में बड़े-बड़े मगरमच्छ (रिश्तेदार, बिरादरी) हैं। आड़ी-टेढ़ी लहरें बहती हैं जिससे दसों दिशाओं में कुछ दिखाई नहीं पड़ता। फिर अन्धकार का ही परदा पड़ जाएगा।

तुम हो अंग मेरे के, जिन देखो माया को मरम जी।
धाम धनी आए तुम कारन, तुमें अजहूं न आवे सरम जी।। ३९ ।।

हे मेरे साथजी ! तुम परमधाम के साथी हो। इसलिए माया के सुखों को मत देखो। धाम धनी तुम्हें बुलाने आए हैं फिर भी शर्म नहीं आती।

ए नींद तुमको क्यों कर उड़सी, जोलों न उठो बल कर जी।
सेवा करो समें पिउ पेहेचान, याद करो आप घर जी।। ४० ।।

हे साथजी ! जब तक हिम्मत कर नहीं उठोगे तब तक तुम्हारी नींद कैसे जाएगी ? तुम इस समय धनी को पहचान कर अपने घर की याद कर धनी की सेवा करो।

ए अमल तुमको क्यों रे उतरसी, जो ज़ेहेर चढ़्या अति भारी जी।
पिउजी के बान तो तोड़े संधान, पर तुमको केहे केहे हारी जी।। ४१ ।।

हे साथजी ! यह माया का नशा तुम्हारा कैसे उतरेगा ? तुम्हें इसका बहुत जहर चढ़ा है। प्रीतम की वाणी तो इतनी जोरदार है कि माया की कड़ियां तोड़ देती है, पर मैं तुमको वाणी सुना-सुनाकर थक गई।

जो जानो घर पाइए अपना, तो एक राखियो रस वैराग जी।
सकल अंगे सुध सेवा कीजो, इन विध बैठो घर जाग जी।। ४२ ।।

यदि अपने घर को प्राप्त करने की इच्छा हो तो माया से वैर और धनी के रस में मग्न रहना तथा सब अंगों से सावचेत होकर धनी की सेवा करना। ऐसा करने से ही अपने घर परमधाम में जाग सकोगे।

जो जानो इत जाग चलें, तो लीजो अर्थ प्रकास जी।
जीव को कहियो ए कह्या सब तोको, सिर लिए होसी उजास जी।। ४३ ।।

हे साथजी ! यदि यहां से जागृत होकर चलने की इच्छा हो तो "प्रकास वाणी" के ज्ञान को ग्रहण करना और जीव को समझाना कि यह तेरी भलाई के वास्ते कहा है। जिसे ग्रहण करने से अन्धकार मिट जाएगा और सुख ही सुख मिलेगा।

इन उजाले ज़ेहेर उतरसी, तब बढ़ते बल नहीं बेर जी।
परआतम को आतम देखसी, तब उतर जासी सब फेर जी।। ४४ ।।

इस वाणी के ज्ञान से माया का नशा उतर जाएगा, तब तुम्हारा आत्मिक बल बढ़ने में देर नहीं लगेगी। तुम्हारी आत्मा यहीं पर बैठे-बैठे अपनी परआतम को देखेगी, तब माया का जहर उतर जाएगा।

Nijanand App

एह विध कर कर आतम जगाई, तब होसी सब सुध जी।
सुध हुए पूर चलसी प्रेम के, होसी जाग्रत हिरदे बुध जी।। ४५ ।।

हे साथजी ! इस प्रकार से तुम्हारी आत्मा जागृत हो जाएगी। तब सब सुध (होश) आ जाएगी। होश आने के बाद जागृत बुद्धि हृदय में आएगी और प्रेम के पूर (प्रवाह) चलेंगे।

निरमल हिरदे में लीजो वचन, ज्यों निकसे फूट बान जी।
ए कह्या ब्रह्मसृष्ट ईश्वरी को, ए क्यों लेवे जीव अग्यान जी।। ४६ ।।

हे साथजी ! इन वचनों को अपने निर्मल हृदय में इस तरह से लेना, जिस तरह एक बाण छेदकर निकल जाता है। यह ज्ञान ब्रह्म सृष्टि और ईश्वरी सृष्टि को कहा है। माया के अज्ञानी जीव इसे नहीं ले सकते।

माया जीव हममें रहे ना सके, सो ले न सके एह वचन जी।
ना तो सब्द घने लागसी मीठे, पर रेहेने ना देवे झूठा मन जी।। ४७ ।।

माया के जीव हम में रह नहीं सकते और न वह इस वाणी को ले सके। यह वाणी उनको अच्छी तो लगेगी, पर उनका झूठा मन उनको लेने नहीं देगा।

जो कोई जीव होए माया को, सो चलियो राह लोक सत जी।
जो कोई होवे निराकार पार को, सो राह हमारी चलत जी।। ४८ ।।

जो कोई माया का जीव हो वह बैकुण्ठ का रास्ता पकड़ना। जो कोई निराकार के पार के हों वह हमारे रास्ते पर चलना।

वासना को तो जीव न कहिए, जीव कहिए तो दुख लागे जी।
झूठ की संगते झूठा केहेत हों, पर क्या करों जानों क्योंए जागे जी।। ४९ ।।

आत्मा को जीव नहीं कहना। जीव कहने से दुःख लगता है, पर सच्ची आत्मा ने झूठे जीव का संग किया है, इसलिए आत्मा को जीव कहना पड़ा है, ताकि आत्मा किसी तरह से जाग जाए।

ए कठन वचन मैं तो केहेती हों, ना तो क्यों कहूं वासना को जीव जी।
जिन दुख देखे गुन्हेंगार होत हो, आग्या ना मानो पिउ जी।। ५० ।।

ऐसा कठोर वचन मैं तो कहती हूं ताकि आत्माएं जागृत हो जाएं। वैसे आत्मा को जीव नहीं कहना चाहिए। जिस माया को देखकर गुनाह कर रहे हो वही अपने धनी की हुकम अदूली (आज्ञा न मानने का दोष) मानी जाती है।

प्रकास बानी तुम नीके कर लीजो, जिन छोडो एक खिन जी।
अन्दर अर्थ लीजो आतम के, विचारियो अंतस्करन जी।। ५१ ।।

हे साथजी ! ज्ञान की इस वाणी को जो 'प्रकास' में कही है, अच्छी तरह से ग्रहण करना और एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ना। आत्मा से वास्तविक अर्थ को समझकर अपने चित्त में विचार करना।

अंदर का जब लिया अर्थ, तब नेहेचे होसी प्रकास जी।
जब इन अर्थें जागी वासना, तब वृथा न जाए एक स्वांस जी।। ५२ ।।

हे साथजी ! जब वास्तविक अर्थ को आप समझ लोगे तो निश्चित ही तुम्हें हकीकत की पहचान हो जाएगी। जब इस हकीकत के ज्ञान से आत्मा जागृत हो जाएगी, तब एक सांस भी फिजूल (व्यर्थ) नहीं जाएगा।

Nijanand App

ए प्रगट बानी कही प्रकास की, इंद्रावती चरने लागे जी।
सो लाभ लेवे दोनों ठौर को, जाकी वासना इत जागे जी।। ५३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी धनी के चरणों में लगकर प्रकास ग्रन्थ की प्रगट वाणी कह रही हैं कि जिसकी आत्मा यहां जाग जाएगी उसे माया में दोनों ठौर (स्थान, ठिकानों) का (माया और परमधाम का) लाभ होगा।

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ ७८८ ॥

बेहद बानी

बेहद के साथी सुनो, बोली बेहद वानी।
बड़े बड़े रे हो गए, पर काहूं न जानी।। १ ।।

हे मेरे बेहद के सुन्दरसाथ! मैंने तुमको बेहद (अखण्ड) की वाणी बताई है, जिसे आज तक बड़े-बड़े (ब्रह्मा, विष्णु, महेश, ज्ञानी, ध्यानी) लोग हो गए, पर किसी ने नहीं जाना।

उपाय किए अनेको, पर काहूं न लखानी।
ए वानी निज बुध बिना, न जाए पेहेचानी।। २ ।।

बहुतों ने कई उपाय किए, पर बेहद कहां है, किसी को पता नहीं चला। यह अखण्ड का ज्ञान जागृत बुद्धि (परा शक्ति) के बिना कोई नहीं पहचान सका।

न तो आए बुध के सागर, गुन खट ग्यानी।
भगवानजी को महादेवजी, पूछे बेहद वानी।। ३ ।।

इस ब्रह्माण्ड में छः शास्त्रों के बड़े-बड़े ज्ञानी आए, किन्तु वह भी पार के ज्ञान को जान नहीं सके। यहां तक कि शंकर भगवान भी नहीं जान सके तो उन्होंने भगवान विष्णु से पूछा।

विष्णु कहे सिवजी सुनो, तुम पूछत हो जेह।
आद करके अबलों, अगम कहियत है एह।। ४ ।।

भगवान विष्णु कहते हैं कि हे शिव ! सुनो, जो तुम पूछ रहे हो उसे, जब से सृष्टि बनी है, आज तक सबने अगम ही अगम पुकारा है। वहां तक कोई जा नहीं सका।

कोट ब्रह्मांड जो हो गए, तित काहूं न सुनी।
खोज खोज खोजी थके, चौदे लोक के धनी।। ५ ।।

करोड़ों ब्रह्माण्ड हो गए, उनमें भी लोगों ने खूब खोजा। यहां तक कि चौदह लोकों के ब्रह्मा, विष्णु, महेश भी खोज-खोजकर थक गए, पर बेहद का एक वचन भी नहीं पा सके।

फेर पूछे सिव विष्णु को, कहे ब्रह्मांड और।
और ब्रह्मांड की वारता, क्यों पाइए इन ठौर।। ६ ।।

फिर शंकरजी ने विष्णु से पूछा कि क्या कोई दूसरा ब्रह्माण्ड और है, दूसरे ब्रह्माण्ड की हकीकत को इस ब्रह्माण्ड में कैसे पाया जाए?

ए बात तो सिवजी जाहेर, इत है कई भांत।
ठौर ठौर कहे वचन, ए जो भेद कल्पांत।। ७ ।।

विष्णुजी उत्तर देते हैं कि हे शंकरजी ! यह तो स्पष्ट है, हर शास्त्रों में इसका वर्णन है। ब्रह्माण्ड का बनना और मिटना लिखा है।

Nijanand App